(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद्–9/947, के सातत्य में शैक्षिक सत्र 2020-21 के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक

हिन्दी

कक्षा-10

सम्पादकद्वय

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच०डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

डॉ०योगेन्द्र नारायण पाण्डेय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत),
बी० एड०, पी-एच०डी०
स्नातकोत्तर (शिक्षा प्रशासन) वरिष्ठ प्रवक्ता
महगाँव इण्टर कॉलेज, महगाँव,
कौशाम्बी

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। किसी काल-विशेष के साहित्य के अनुशीलन से हम उस काल की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक दशा से परिचित होते हैं। साहित्य का अध्ययन किसी समाज के इतिहास को जानने का एक उत्तम साधन है। देश के महापुरुषों, महान् कलाकारों, लेखकों, कवियों, वीर-वीरांगनाओं के कार्यकलापों का परिचय हमें साहित्यिक रचनाओं में प्राप्त होता है। अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों, रीति-रिवाजों और परम्पराओं का ज्ञान भी हमें साहित्यिक कृतियों से प्राप्त होता है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा **कक्षा 10** के लिए निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी विषय की पाठ्य-पुस्तकों में '**हिन्दी गद्य**', '**हिन्दी काव्य**', '**संस्कृत**', '**व्याकरण**', **निबन्ध** एवं **खण्डकाव्य** का समावेश किया गया है। इस संकलन में हिन्दी साहित्य के कतिपय जाने-माने लेखकों एवं कवियों की रचनाओं से पाठ संकलित किये गये हैं। सभी पाठ मौलिक हैं। इनको पढ़ने से छात्र-छात्राओं को अपने देश के बारे में अनेक नयी जानकारियाँ मिलेंगी। विशेष बात यह है कि इसके अनुशीलन से छात्र-छात्राएँ अपनी भाषा के कुछ यशस्वी साहित्यकारों एवं कवियों का परिचय प्राप्त कर पायेंगे। उनकी रचनाओं को पढ़कर हिन्दी साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न होगा। विश्वास है कि इन पाठों को पढ़कर कुछ छात्र-छात्राओं में साहित्यिक रचना के लिए प्रेरणा का भी उद्रेक होगा।

प्रत्येक लेखक एवं कवि के परिचय के अन्तर्गत उसका जीवन-परिचय, साहित्यिक अवदान, कृतियाँ एवं भाषा-शैली अनुच्छेदवार दिया गया है। पाठ्यक्रम के अनुरूप इस पाठ्य-पुस्तक में 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया गया है।

'संस्कृत' के अन्तर्गत चुनी हुई रचनाओं को स्थान दिया गया है, जो ज्ञानवर्द्धक एवं सुरुचिपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी एवं संस्कृत व्याकरण के सरलतम स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

जिन साहित्यकारों की रचनाएँ इस पाठ्य-पुस्तक में संकलित की गयी हैं; उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं तथा बहुमूल्य रचनात्मक सुझाव भेजनेवालों के भी हम हृदय से आभारी होंगे।

—सम्पादक एवं प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज द्वारा निर्धारित नवीन पाठ्यक्रम

हिन्दी

कक्षा-10

- **इसमें 70 अंकों की लिखित परीक्षा तथा 30 अंकों का विद्यालय स्तर पर प्रोजेक्ट कार्य होगा** **पूर्णांक 100**

1. (क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (शुक्ल तथा शुक्लोत्तर युग) 5
(ख) हिन्दी पद्य का विकास का संक्षिप्त परिचय (रीतिकाल तथा आधुनिक काल) 5

2. गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से 2 + 2 + 2 = 6
- सन्दर्भ
- रेखांकित अंश की व्याख्या
- तथ्यपरक प्रश्न

3. काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से 1 + 4 + 1 = 6
- सन्दर्भ
- व्याख्या
- काव्य सौन्दर्य

4. संस्कृत गद्यांश अथवा पद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद 1 + 3 = 4

5. निर्धारित पाठों के लेखकों एवं कवियों के जीवन परिचय एवं रचनायें 3 + 3 = 6

6. **(1)** संस्कृत के निर्धारित पाठों से कण्ठस्थ एक श्लोक 2
(जो प्रश्न-पत्र में न आया हो)
(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों पर आधारित दो अति लघुत्तरीय प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर 2

7. काव्य सौन्दर्य के तत्व 2 + 2 + 2 = 6
(क) रस (हास्य एवं करूण रस की परिभाषा, उदाहरण, पहचान)
(ख) अलंकार (अर्थालंकार) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
(ग) छन्द-सोरठा, रोला (लक्षण, उदाहरण, पहचान)

8. हिन्दी व्याकरण–शब्द रचना के तत्व 3 + 2 + 2 + 2 + 2 = 11
(क) **उपसर्ग–**अ, अन, अधि, अप, अनु, उप, सह, निर, अभि, परि, सु।
(ख) **प्रत्यय–**आई, त्व, ता, पन, वा, हट, वट।
(ग) **समास–**द्वन्द्व, द्विगु, कर्मधारय, बहुव्रीहि।
(घ) तत्सम शब्द।
(ङ) पर्यायवाची।

9. संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद– $2+2+2+2=8$

(क) सन्धि-यण, वृद्धि (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

(ख) शब्द रूप (सभी विभक्तियों एवं वचनों में)

संज्ञा–फल, मति, मधु, नदी।

सर्वनाम–तद्, युष्मद्।

(ग) धातु रूप (लट्, लोट्, लृट्, विधिलिंग, लङ् लकारों में)

पठ्, हस्, दृश्, पच्।

(घ) हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

10. निबन्ध रचना–वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं पर आधारित एवं जनसंख्या, स्वास्थ्य शिक्षा, पर्यावरण एवं ट्राफिक रूल्स पर आधारित विषय। 6

11. खण्ड काव्य–संक्षिप्त कथावस्तु, घटनायें, चरित्र-चित्रण 3

आन्तरिक मूल्यांकन

अंक योग 30 अंक

(प्रत्येक दो माह के अन्तिम सप्ताह में)

प्रथम–अगस्त माह में 10 अंक-वाचन (भाषण, वाद-विवाद, विचारों की अभिव्यक्ति आदि)।

द्वितीय–अक्टूबर, माह में 10 अंक-व्याकरण सम्बन्धी।

तृतीय–दिसम्बर माह में 10 अंक–सृजनात्मक निबन्ध, नाटक, कहानी, कविता, अपठित आदि।

☞ निर्धारित पाठ्य वस्तु–

गद्य हेतु –

◆ मित्रता	राम चन्द्र शुक्ल
◆ ममता	जयशंकर प्रसाद
◆ क्या लिखूँ	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
◆ भारतीय संस्कृति	राजेन्द्र प्रसाद
◆ ईर्ष्या तु न गयी मेरे मन से	रामधारी सिंह दिनकर
◆ अजन्ता	भगवत शरण उपाध्याय
◆ पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी	जय प्रकाश भारती

काव्य हेतु–

◆ सूरदास	पद
◆ तुलसीदास	धनुष भंग, वन पथ पर
◆ रसखान	सवैये, कवित्त
◆ बिहारी लाल	भक्ति नीति
◆ सुमित्रानन्दन पंत	चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार
◆ महादेवी वर्मा	हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति
◆ रामनरेश त्रिपाठी	स्वदेश प्रेम
◆ माखन लाल चतुर्वेदी	पुष्प की अभिलाषा, जवानी
◆ सुभद्रा कुमारी चौहान	झांसी की रानी की समाधि पर

◆ मैथिलीशरण गुप्त	भारतमाता का मंदिर यह
◆ केदार नाथ सिंह	नदी
◆ अशोक बाजपेयी	युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है
◆ श्याम नारायण पाण्डेय	हल्दीघाटी

संस्कृत हेतु–

- वाराणसी,
- अन्योक्तिविलासः
- वीरः वीरेण पूज्यते
- प्रबुद्धो ग्रामीणः
- देशभक्तः चन्द्रशेखरः
- केन किं वर्धतेः
- छांदोग्योपनिषद् षष्ठोध्यायः से आरूणि श्वेतकेतु संवादः
- भारतीयाः संस्कृतिः
- जीवन-सूत्राणि।

खण्ड काव्य–(जिलेवार)

खण्ड काव्य के लिये–

☞ निर्धारित पाठ्य वस्तु

क्रमांक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	अनुदानित जिले
1.	मुक्तिदूत	अशोक कुमार अग्रवाल, 43, चाहचन्द गेड, इलाहाबाद।	आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी उन्नाव।
2.	ज्योति जवाहर	मोहन प्रकाशन, जवाहर नगर, कानपुर	कानपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा।
3.	अग्रपूजा	हिन्दी भवन, 63 टैगोर नगर, इलाहाबाद	इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा।
4.	मेवाड़ मुकुट	शंकर प्रकाशन, 8/98 आर्यनगर, कानपुर	बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर बहराइच।
5.	जय सुभाष	गेहिताश्व प्रकाशन, 368 मालती सदन, ऐशबाग, लखनऊ	लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बांदा, झांसी हरदोई।
6.	मातृभूमि के लिये	आधुनिक प्रकाशन गृह, दारागंज, इलाहाबाद	गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर।
7.	कर्ण	बुनियादी साहित्य मन्दिर, पटना-4	अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा।
8.	कर्मवीर भरत	हिन्दुस्तान बुक हाउस, अस्पताल रोड, परेड, कानपुर,	मेरठ, फर्रूखाबाद, पीलीभीत, रायबरेली।
9.	तुमुल	इण्डियन प्रेस पब्लिकेशन प्रा. लि., 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद	वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, बदायूँ

नोट–उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य जिलों/नये सृजित जिलों में खण्ड काव्य पूर्व वर्षों की भाँति यथावत पढ़ाये जायेंगे।

●●

विषय-सूची

हिन्दी गद्य

क्रमाङ्क	पाठ का नाम		पृष्ठ-संख्या
●	भूमिका	....	9
●	हिन्दी गद्य का विकास	....	10
●	शुक्ल युग	....	13
●	शुक्लोत्तर युग	....	13
●	हिन्दी गद्य की विधाएँ	....	15
●	हिन्दी गद्य के विकास से सम्बन्धित प्रश्न	....	20
●	अध्ययन-अध्यापन	....	25
1.	**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**	....	27
	● मित्रता	....	29
2.	**जयशंकर प्रसाद**	....	35
	● ममता	....	37
3.	**पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी**	....	42
	● क्या लिखूँ	....	44
4.	**डॉ० राजेन्द्र प्रसाद**	....	49
	● भारतीय संस्कृति	....	50
5.	**रामधारीसिंह 'दिनकर'**	....	57
	● ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से	....	59
6.	**डॉ० भगवतशरण उपाध्याय**	....	65
	● अजन्ता	....	67
7.	**जयप्रकाश भारती**	....	71
	● पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी	....	73
●	**परिशिष्ट :** हिन्दी व्याकरण : शब्द रचना के तत्त्व	....	78

हिन्दी काव्य

●	भूमिका	....	90
●	हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास	....	94
●	हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न	....	100
●	अध्ययन-अध्यापन	....	104
1.	**सूरदास**	....	106
	पद		
2.	**तुलसीदास**	....	112
	धनुषभंग, वन-पथ पर		
3.	**रसखान**	....	119
	सवैये, कवित्त		
4.	**बिहारीलाल**	....	122
	दोहे–भक्ति, नीति		
5.	**सुमित्रानन्दन पन्त**	....	126
	चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार		
6.	**महादेवी वर्मा**	....	132
	हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति		

7.	**रामनरेश त्रिपाठी** स्वदेश-प्रेम	....	137
8.	**माखनलाल चतुर्वेदी** पुष्प की अभिलाषा, जवानी	....	141
9.	**सुभद्राकुमारी चौहान** झाँसी की रानी की समाधि पर	....	146
10.	**मैथिलीशरण गुप्त** भारत माता का मन्दिर यह	....	150
11.	**केदारनाथ सिंह** नदी	....	154
12.	**अशोक वाजपेयी** युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है	....	158
13.	**श्याम नारायण पाण्डेय** हल्दी घाटी	....	162
●	**परिशिष्ट** **काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व**	....	165

संस्कृत

प्रथमः पाठः	– वाराणसी	....	173
द्वितीयः पाठः	– अन्योक्तिविलासः	....	176
तृतीयः पाठः	– वीरः वीरेण पूज्यते	....	179
चतुर्थः पाठः	– प्रबुद्धो ग्रामीणः	....	182
पञ्चमः पाठः	– देशभक्तः चन्द्रशेखरः	....	185
षष्ठः पाठः	– केन किं वर्धते?	....	188
सप्तमः पाठः	– आरुणि श्वेतकेतु संवाद	....	191
अष्टमः पाठः	– भारतीया संस्कृतिः	....	193
नवमः पाठः	– जीवन-सूत्राणि	....	196
●	**परिशिष्ट** : संस्कृत व्याकरण	....	199
●	सन्धि	....	199
●	शब्द-रूप : संज्ञा-शब्द	....	203
●	शब्द-रूप : सर्वनाम-शब्द	....	204
●	धातु-रूप	....	206
●	हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद	....	210
●	निबन्ध	....	223

खण्ड काव्य

1.	मुक्तिदूत	....	253
2.	ज्योति जवाहर	....	255
3.	अग्रपूजा	....	257
4.	मेवाड़ मुकुट	....	259
5.	जय सुभाष	....	261
6.	मातृभूमि के लिए	....	263
7.	कर्ण	....	265
8.	कर्मवीर भरत	....	268
9.	तुमुल	....	270

●●

|| हिन्दी गद्य ||

भूमिका

➤ गद्य क्या है?

छन्द, ताल, लय एवं तुकबन्दी से मुक्त तथा विचारपूर्ण एवं वाक्यबद्ध रचना को 'गद्य' कहते हैं। गद्य शब्द 'गद्' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से बनता है। 'गद्' का अर्थ होता है—बोलना, बतलाना या कहना। सामान्यतः दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली बोलचाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल एवं सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित सम्प्रेषित करना है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर कथा-साहित्य आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम साधारण व्यवहार की भाषा गद्य ही है; जिसका प्रयोग सोचने, समझने, वर्णन, विवेचन आदि के लिए होता है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल गद्य के रूप में व्यक्त भी कर सकता है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। किसी कवि या लेखक के हृदयगत भावों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और गद्य ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है। इसीलिए इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र प्रभाव स्थापित हो गया है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो आधुनिक हिन्दी-साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गद्य का आविष्कार ही है और गद्य का विकास होने पर ही हमारे साहित्य की बहुमुखी उन्नति भी सम्भव हो सकी है।

हिन्दी गद्य के सम्बन्ध में यह धारणा है कि मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जानेवाली खड़ीबोली के साहित्यिक रूप को ही हिन्दी गद्य कहा जाता है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ब्रजभाषा, खड़ीबोली, कन्नौजी, हरियाणवी, बुन्देलखण्डी, अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी इन आठ बोलियों को हिन्दी गद्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। हिन्दी गद्य के प्राचीनतम् प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

➤ गद्य और पद्य में अन्तर

हिन्दी साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है—(1) गद्य साहित्य तथा (2) पद्य (काव्य) साहित्य। विषय की दृष्टि से गद्य और पद्य में यह अन्तर है कि गद्य के विषय विचार-प्रधान और पद्य के विषय भाव-प्रधान होते हैं। दूसरी भाषाओं के समान इस भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य में कार्य की अनुभूति, उक्ति-वैचित्र्य, सम्प्रेषणीयता और अलंकार की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि गद्य में लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। गद्य में तर्क, बुद्धि, विवेक, चिन्तन का अंकुश होता है तो पद्य में स्वतन्त्र कल्पना की उड़ान होती है। गद्य में शब्द, वाक्य, अर्थ आदि सभी प्रायः सामान्य होते हैं, जबकि पद्य में विशिष्ट। कविता शब्दों की नयी सृष्टि है, इसलिए इसका कोई भी शब्द कोशीय अर्थ से प्रतिबन्धित नहीं होता, जीवन की अनुभूतियों से उसका भावात्मक सम्बन्ध होता है, जबकि गद्य भावात्मक सन्दर्भों के स्थान पर उनके वस्तुनिष्ठ प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करता है। गद्य को 'निर्माणात्मक अभिव्यक्ति' कहा गया है अर्थात् ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें शब्द निर्माता के चारों ओर प्रयोग के लिए तैयार रहते हैं। गद्य की भाषा काव्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, व्याकरणसम्मत और व्यवस्थित होती है। उक्ति-वैचित्र्य और अलंकरण की प्रवृत्ति भी गद्य की अपेक्षा काव्य में अधिक होती है। गद्य में विस्तार अधिक होने के कारण किसी बात को खोलकर कहने की प्रवृत्ति रहती है, जबकि काव्य में किसी बात को संकेत रूप में ही कहने की प्रवृत्ति होती है। गद्य में यथार्थ, वस्तुपरक और

तथ्यात्मक वर्णन पाया जाता है, जबकि काव्य में वर्णन सूक्ष्म, संकेतात्मक होता है। गद्य में विरला ही वाक्य अपूर्ण होता है, काव्य में विरला ही वाक्य पूर्ण होता है। इस प्रकार गद्य और पद्य विषय, भाषा, प्रस्तुति, शिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप हैं और दोनों के दृष्टिकोण एवं प्रयोजन भी भिन्न होते हैं। गद्य में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती, जबकि पद्य में व्याकरण के नियमों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यद्यपि ऐसा नहीं है कि गद्य में भावपूर्ण चिन्तनशील मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती और पद्य में विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती, किन्तु सामान्यतः गद्य एवं पद्य की प्रकृति उपर्युक्त प्रकार की ही होती है।

➤ हिन्दी गद्य का स्वरूप

विषय और परिस्थिति के अनुरूप शब्दों का सही स्थान-निर्धारण तथा वाक्यों की उचित योजना ही उत्तम गद्य की कसौटी है। यद्यपि वर्तमान में प्रचलित हिन्दी भाषा खड़ीबोली का परिनिष्ठित एवं साहित्यिक रूप है, परन्तु खड़ीबोली स्वयं अपने-आपमें कोई बोली नहीं है। इसका विकास कई क्षेत्रीय बोलियों के समन्वय के फलस्वरूप हुआ है। विद्वानों ने इसके प्राचीन रूप पर आधारित तत्त्वों की खोज करने के बाद यह माना है कि खड़ीबोली का विकास मुख्यतः ब्रजभाषा एवं राजस्थानी गद्य से हुआ है। कुछ विद्वान् इसको दक्खिनी एवं अवधी गद्य का सम्मिलित रूप भी मानते हैं। आज हिन्दी गद्य का जो साहित्यिक रूप है, उसमें कई क्षेत्रीय बोलियों का विकास दृष्टिगोचर होता है।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं समझता है। भाषा के माध्यम से वह अपने विचारों, भावों, अनुभूतियों आदि को दो प्रकार से व्यक्त करता है— पद्य में या गद्य में। उसकी अभिव्यक्ति के इन दो रूपों के सृजन के कारक तत्त्व हैं—भावना-प्रवण हृदय और विचारकेन्द्र मस्तिष्क। हृदय और मस्तिष्क की न्यूनाधिक सक्रियता के फलस्वरूप ही अभिव्यक्ति के इन रूपों को हम क्रमशः गद्य-साहित्य और पद्य (काव्य) साहित्य कहते हैं। गद्य हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का नाम है और उसका छन्दोबद्ध रूप, जिसमें क्रमबद्ध ताल और लय की योजना के साथ रागात्मक मनोभावों की कलापूर्ण अभिव्यंजना उपस्थित की जाती है, पद्य या काव्य कहलाता है।

गद्य वाक्यबद्ध विचारात्मक रचना होती है। इसका लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल, सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित सम्प्रेषित करना है। वक्तव्य का पूर्ण यथातथ्य और प्रभावोत्पादक सम्प्रेषण गद्यकार का प्रमुख दायित्व है। गद्य की भाषा-प्रकृति व्यावहारिक होती है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल अनायास व्यक्त भी कर सकता है। काव्य-भाषा की भाँति इसमें भंगिमा, वक्रता, अलंकृति, लय, तुक, यति, प्रवाह आदि लाने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। गद्य में संवेदनशीलता की अपेक्षा बोधवृत्ति की प्रधानता रहती है। अतएव वर्णन, कथा, विचार, व्याख्या, अनुसन्धान के लिए यह सर्वाधिक समर्थ एवं उपयुक्त माध्यम है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन एवं विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र राज्य स्थापित हो चुका है। आज महाकाव्यों का युग नहीं रहा, उपन्यासों का युग है। भारतेन्दु युग से ही प्रभूत मात्रा में गद्य-साहित्य पढ़ा-लिखा जाने लगा। सम्प्रति हमारा साहित्य अधिकांशतः गद्य में ही लिखा जा रहा है।

➤ हिन्दी गद्य का विकास

गद्य का प्रथम विकास सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में होता है। इतिहास, दर्शन तथा विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसे गद्य की मध्यम स्थिति माना जा सकता है। साहित्य में जिस गद्य-रूप का उपयोग होता है, उसे अभिव्यंजना, सौष्ठव आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ मानना चाहिए। विभिन्न लेखकों और कवियों का न केवल वैचारिक जगत् अपना होता है, बल्कि अपने विचारों, भावों, अनुभूतियों आदि को अभिव्यक्त करने के लिए उन्हें अपनी भाषा की भी सृष्टि करनी पड़ती है। क्या प्रेमचन्द, क्या प्रसाद और क्या शुक्ल जी, प्रायः सभी को अपने-अपने मनोजगत् की सृष्टि के साथ ही अपनी-अपनी भाषा-शैली भी विकसित करनी पड़ी है।

भाषा-रूपों के विकास की दृष्टि से इसकी तीन कोटियाँ उपलब्ध हैं—

(1) इतिहास, जीवनी, यात्रा आदि के लिए **वर्णनात्मक;** (2) विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, आलोचना, दर्शन, विधि आदि के

लिए **विवेचनात्मक;** (3) ललित निबन्ध, गद्य गीत, नाटक आदि के लिए **भावात्मक**। विविध विषयों के अनुरूप गद्य-प्रवाह, स्पष्टता, चित्रमयता, अलंकरण आदि की मात्राओं में भी कमी-वेशी करनी पड़ी है। गद्य की उपर्युक्त कोटियों में अभेद्य दीवार खड़ी नहीं की जा सकती; लेखक की रुचि, प्रयोजन, मन की अवस्था, व्यक्तिगत अनुभूति आदि के कारण वे एक-दूसरे में अंतःप्रविष्ट होती हैं। आचार्य शुक्ल के एक ही निबन्ध का प्रारम्भ जहाँ विवेचनात्मक होता है, वहीं बीच-बीच में भावात्मक कोटि की भाषा के भी दर्शन हो जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शाखा और विधा ने आवश्यकतानुसार अपनी विशिष्ट विधि और शैली का विकास किया है, साथ ही परस्पर उनका आदान-प्रदान भी चलता रहता है।

संसार की दूसरी भाषाओं के समान हिन्दी भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य की इस प्राचीनता के अनेक कारण हैं। एक प्रमुख कारण तो यह है कि आरम्भ में मानव को अपनी भावप्रधान प्रकृति के कारण पद्य-रचना में ही वास्तविक आनन्द की अनुभूति होती थी। मन की प्रसन्नता के लिए कविता से बढ़कर दूसरा साधन उसे कहाँ मिलता? दूसरा कारण यह है कि उस समय टंकण-मुद्रण आदि साधनों के अभाव में विचारों को सँजोये रख सकना सम्भव नहीं था। पद्य चूँकि निश्चित लय-ताल में होने के कारण सरलता से कण्ठस्थ हो जाता है, इसलिए प्राचीनकाल के मानव ने ज्योतिष, विज्ञान, आयुर्वेद जैसे विषयों से सम्बन्धित अनुभव-सामग्री को भी पद्य का स्वरूप देकर भविष्य की पीढ़ियों के लिए संचित कर लिया था। परिणामतः कई शताब्दियों तक पद्य का ही प्राधान्य रहा और ब्रजभाषा-गद्य के कुछ छुटपुट प्रयत्नों को अपवाद मान लें तो उसका वास्तविक जन्म 19वीं शताब्दी में ही हुआ, परन्तु पिछले 100 वर्षों में जिस त्वरित गति से उसके चरण बढ़े हैं, जिन विविध दिशाओं में उसने मानव-अनुभूतियों का प्रसार किया है, उसे देखकर आश्चर्य होता है।

हिन्दी गद्य के आविर्भाव के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ 10वीं शताब्दी मानते हैं, तो बहुतेरे 13वीं शताब्दी। 19वीं शताब्दी के नवजागरण काल में हिन्दी गद्य का वास्तविक स्वरूप उस समय स्पष्ट दिखायी देने लगा जब हमारा देश मध्यकालीन रूढ़ियों से मुक्त होता हुआ पश्चिम से आती हुई नवीन सांस्कृतिक चेतना की लहरों को आत्मसात् कर रहा था। नये आधुनिक विचारों, नवीन शिक्षा पद्धति और नये वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर पड़ रहा था; अतः साहित्य में उनकी प्रतिध्वनि स्वाभाविक थी। इन नवीन परिस्थितियों के साथ ही शासन सम्बन्धी आवश्यकताएँ भी गद्य के नवीन माध्यम की माँग कर रही थीं।

हिन्दी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग राजस्थानी ब्रजभाषा में मिलते हैं। राजस्थानी गद्य हमें 10वीं शताब्दी के दान-पत्रों, पट्टे-परवानों, टीकाओं व अनुवाद-ग्रन्थों में देखने को मिलता है। ब्रजभाषा के गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 वि0 के आस-पास हुआ। कृष्ण-भक्ति धारा के कवियों तथा भक्तों ने उसके विकास और संवर्द्धन में विशेष योग दिया। 17वीं शताब्दी तक की लिखी हुई जो रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें गोस्वामी विट्ठलनाथ का **'शृंगार रस-मण्डन'**, गोकुलनाथ जी के **'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता'** और **'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता'**, नाभादासजी का **'अष्टयाम'**, बैकुण्ठमणि शुक्ल के **'अगहन माहात्म्य'** और **वैशाख माहात्म्य** तथा लल्लूलाल कृत **'माधव विलास'** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं के साथ टीकाओं की परम्परा भी चलती रही।

खड़ीबोली गद्य के प्रथम दर्शन अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित **'चन्द छन्द बरनन की महिमा'** नामक ग्रन्थ और फिर **'कुतुबशतक'** तथा स्वामी प्राणनाथ के ग्रन्थों में होते हैं, परन्तु उसका वास्तविक प्रादुर्भाव कई सौ वर्षों बाद 19वीं शताब्दी से ही मानना चाहिए, जब उसकी क्रमबद्ध परम्परा स्थापित हुई। 19वीं शताब्दी के कुछ पूर्व ही उस धारा के आगमन के संकेत हमें मिलने लगते हैं। ये आरम्भिक प्रयोग 18वीं शताब्दी के मध्य और उत्तरार्द्ध में रामप्रसाद निरंजनी कृत **'योग वाशिष्ठ'**, दौलतराम कृत **'पद्म पुराण'** के भाषानुवाद, मथुरानाथ शुक्ल के **'पंचांग दर्शन'**, मुंशी सदासुखलाल के **'सुखसागर'**, 'इंशाअल्ला खाँ की **'रानी केतकी की कहानी'**, लल्लूलाल के **'प्रेमसागर'** व सदल मिश्र के **'नासिकेतोपाख्यान'** आदि ग्रन्थों में मिलते हैं। खड़ीबोली गद्य को एक साथ बढ़ाने के महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए अन्तिम चार लेखकों—सदासुखलाल, इंशाअल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र को विशेष श्रेय दिया जाता है। इन चारों लेखकों का रचना-काल सन् 1803 ई0 के आस-पास ही ठहरता है।

मुंशी सदासुखलाल का गद्य पुराने कथावाचकों जैसा पण्डिताऊपन लिये हुए था। लल्लूलाल की भाषा पर ब्रज का प्रभाव था। सदल मिश्र का गद्य अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ, संयत था, पर पूरबी प्रयोगों की अधिकता का दोष उनकी भाषा

में भी था। इंशाअल्ला खाँ की भाषा में ठेठ खड़ीबोली के दर्शन होते हैं। उसमें न तो विदेशी शब्दों का प्रयोग हुआ है और न संस्कृत और ब्रजभाषा आदि के शब्दों का। उसमें गम्भीरता की कमी और पद्यात्मकता की गन्ध मिलती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इंशाअल्ला खाँ की भाषा को 'रंगीन और चुलबुली' कहा है।

खड़ीबोली गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने बाइबिल का खड़ीबोली में अनुवाद कराया और उसे उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में वितरित कर अपने धर्म के साथ ही हिन्दी का भी प्रसार किया। आगे चलकर आर्य-समाज के आन्दोलन से भी हिन्दी प्रसार को अपूर्व शक्ति मिली। स्वामी दयानन्द ने अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में ही की थी।

19वीं शताब्दी के मध्य में दो और लेखक सामने आये। **राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'** (सन् 1823-1895) ने हिन्दी गद्य का अरबी-फारसी मिश्रित रूप प्रतिष्ठित करना चाहा और इसके विरुद्ध **राजा लक्ष्मण सिंह** (सन् 1826-1896) ने विशुद्ध संस्कृतगर्भित हिन्दी गद्य को प्रश्रय दिया। उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी के दैनिक व्यवहार में प्रचलित शब्दों तक को अपनी भाषा से दूर रखा। इसके अतिरिक्त आगरा की बोली का प्रभाव भी उनकी भाषा पर कम नहीं था। इसी समय देश के क्षितिज पर **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (1850-1885) का उदय हुआ। भारतेन्दु ने अपनी अनोखी प्रतिभा और महान् व्यक्तित्व से तत्कालीन समाज को अद्भुत रूप से प्रभावित किया। उन्होंने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा-सम्बन्धी दोषों से बचते हुए हिन्दी गद्य का स्वच्छ, सन्तुलित और शिष्ट रूप सामने रखा। उन्होंने संस्कृत के सरल शब्दों को लेने के साथ-साथ सर्वसाधारण में प्रचलित विदेशी शब्दों को भी ग्रहण किया, तद्भव और देशज शब्द तो थे ही। इसके अतिरिक्त कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से उन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की। उनके नेतृत्व में हिन्दी साहित्य को नये क्षितिज प्राप्त हुए। वे वस्तुतः आधुनिकता के जनक थे। ललित साहित्य की अनेक विधाओं के अतिरिक्त उपयोगी साहित्य के अन्तर्गत आनेवाले विभिन्न विषयों की ओर भी उनकी दृष्टि गयी। यह उन्हीं की प्रेरणा थी कि खड़ीबोली हिन्दी की बाल्यावस्था में ही इतिहास, भूगोल, विज्ञान, धर्म, पुराण, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, पुरातत्त्व आदि न जाने कितने विषयों की ओर हिन्दी के लेखक प्रवृत्त हुए। भारतेन्दु एक व्यक्ति नहीं, वरन् संस्था थे। उन्होंने कितने ही लेखकों को जन्म दिया, जिनमें प्रमुख हैं—**श्रीनिवासदास** (1851-1887), **बालकृष्ण भट्ट** (1844-1914), **प्रतापनारायण मिश्र** (1856-1894), **राधाकृष्णदास** (1865-1907), **कार्तिकप्रसाद खत्री** (1851-1904), **राधाचरण गोस्वामी** (1850-1925), **बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'** (1855-1923) आदि। भारतेन्दु-युग का गद्य अत्यन्त सजीव है। इस युग के लेखकों में अपनी भाषा, अपनी जाति और अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए बड़ी अकुलाहट थी और उन्होंने नव युग की इस नयी लहर को घर-घर पहुँचाने का अथक प्रयास किया था।

भारतेन्दु-युग के बाद 20वीं शताब्दी में जिस एक व्यक्ति ने हिन्दी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया, उसका नाम **महावीरप्रसाद द्विवेदी** है। इण्डियन प्रेस, प्रयाग से 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण घटना थी। **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** इसके यशस्वी सम्पादक थे। इस पत्रिका के माध्यम से द्विवेदीजी ने भाषा के परिमार्जन का अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न किया। **द्विवेदी युग** के प्रवर्तक भी यही हैं। उनकी प्रेरणा और निर्देशन से ललित और उपयोगी दोनों प्रकार का साहित्य विपुल परिमाण में लिखा गया। 'सरस्वती' ने हिन्दी भाषा का एक स्तर प्रतिष्ठित किया। भाषा के शब्द-भण्डार की वृद्धि के साथ-साथ उसकी अभिव्यञ्जना-शक्ति की भी अभिवृद्धि हुई। विविध प्रकार की भाषा-शैलियों के जन्म के साथ-साथ गद्य के विविध रूपों का विकास हुआ।

उपन्यास साहित्य में देवकीनन्दन खत्री के चमत्कारप्रधान तिलिस्मी उपन्यासों की परम्परा से हटकर मानव-चरित्र की ओर इस युग के रचनाकार सचेष्ट हुए; जैसे—जासूसी, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, चरित्रप्रधान, भावप्रधान सभी प्रकार के उपन्यास इस युग में लिखे गये। द्विवेदी युग के उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी, वृन्दावनलाल वर्मा, विश्वम्भरनाथ 'कौशिक' और चतुरसेन शास्त्री उल्लेखनीय हैं।

कहानी का तो जन्म ही 'सरस्वती' से हुआ। पहले अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध कृतियों के कहानी-रूपान्तर 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए। इसके बाद हिन्दी की मौलिक कहानी ने जन्म लिया और धीरे-धीरे घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, वातावरणप्रधान, भावनाप्रधान कहानियाँ प्रकाश में आयीं। 'प्रसाद', 'कौशिक', चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' और सुदर्शन इस युग के प्रतिनिधि कहानीकार हैं।

द्विवेदी युग में द्विवेदी जी के अतिरिक्त माधव मिश्र, गोविन्दनारायण मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्णसिंह,

श्यामसुन्दर दास, मिश्र-बन्धु, लाला भगवानदीन, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि लेखकों ने योगदान दिया।

पत्र-पत्रिकाओं में **'सरस्वती'** के अतिरिक्त **'नागरी प्रचारिणी पत्रिका'**, **'इन्दु'**, **'माधुरी'**, **'मर्यादा'**, **'सुधा'**, **'जागरण'**, **'हंस'**, **'प्रभा'**, **'कर्मवीर'**, **'विशाल भारत'** आदि ने हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में बहुत बड़ी भूमिका प्रस्तुत की।

➤ शुक्ल (छायावादी) युग

सन् 1919 से 1938 ई० तक के काल को हिन्दी-गद्य-साहित्य में **पं० रामचन्द्र शुक्ल** के महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण 'शुक्ल युग' नाम दिया गया। इस युग को 'छायावादी युग', 'प्रसाद युग', 'प्रेमचन्द युग' के नामों से भी जाना जाता है। सन् 1919 ई० में पंजाब के जलियाँवाला बाग काण्ड ने राष्ट्रीय चेतना को और दृढ़ता प्रदान की। युवकों का कल्पनाशील मानस कुछ कर गुजरने के लिए तड़पने लगा। इस युग में पराधीनता और विवशता की अनुभूति से आकुल होकर यदि कभी वेदना और पीड़ा के गीत गाये गये, तो दूसरे ही क्षण स्वाधीनता के लिए सतत संघर्ष की बलवती प्रेरणा से उत्साहित होकर स्फूर्ति और आत्मविश्वास की भावना को मुखरित किया गया। इस युग की सीमा में रचित गद्य अधिक कलात्मक हो गया है। वह चित्रण-प्रधान, लाक्षणिक, अलंकृत और कवित्वपूर्ण हो गया है। उसमें अनुभूति की सघनता और भावों की तरलता है। उसकी प्रकृति अन्तर्मुखी हो गयी है। रायकृष्णदास, वियोगी हरि,डॉ० रघुवीर सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', नन्ददुलारे वाजपेयी, बेचन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय आदि गद्य-लेखकों ने छायावादयुगीन गद्य साहित्य को समृद्ध किया है।

विभिन्न विधाओं के लेखक एवं उनकी कृति

लेखक	कृति	विधा
● आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि	निबन्ध
● गुलाब राय	ठलुआ क्लब	निबन्ध
● प्रेमचन्द	गबन	उपन्यास
● चतुरसेन शास्त्री	आत्मदाह	उपन्यास
● जयशंकर प्रसाद	पुरस्कार	कहानी
● प्रेमचन्द	पंच परमेश्वर	कहानी
● जयशंकर प्रसाद	चन्द्रगुप्त	नाटक
● हरिकृष्ण प्रेमी	प्रतिशोध	नाटक

शुक्ल युग के प्रमुख **निबन्धकारों** में बाबू गुलाबराय, प्रेमचन्द, श्यामसुन्दर दास, जयशंकर प्रसाद, पन्त, निराला, राहुल सांकृत्यायन, वियोगी हरि, हजारीप्रसाद द्विवेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० सम्पूर्णानन्द, शान्तिप्रिय द्विवेदी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रमुख **एकांकीकारों** में भुवनेश्वर प्रसाद, जयशंकर प्रसाद, धर्मप्रकाश आनन्द, गोविन्दवल्लभ पन्त, चतुरसेन शास्त्री, डॉ० रामकुमार वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, विष्णु प्रभाकर एवं भगवतीचरण वर्मा आदि हैं। इस युग के **उपन्यासकारों** में प्रेमचन्द, प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, भगवतीचरण वर्मा, बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री आदि हैं। शुक्ल युग के **कहानीकारों** में प्रेमचन्द, उग्र, रायकृष्णदास, विनोद शंकर व्यास, सियारामशरण गुप्त, गोविन्दवल्लभ पन्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस युग के अन्तर्गत नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का है। उनके नाटकों में देश के प्राचीन गौरव के चित्र हैं और उनमें संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं के रंग पर्याप्त गहरे हैं। चरित्र-चित्रण, कथोपकथन व उद्देश्य की दृष्टि से 'प्रसाद' के नाटकों की महत्ता असन्दिग्ध है। 'प्रसाद' के परवर्ती **नाटककारों** में लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, रामकुमार वर्मा, सेठ गोविन्ददास, उदयशंकर भट्ट, गोविन्दवल्लभ पन्त व उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के नाम उल्लेखनीय हैं।

समालोचना और इतिहास-लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के विराट् योगदान के पश्चात् आलोचना-क्षेत्र में नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डॉ० नगेन्द्र और डॉ० रामविलास शर्मा एवं इतिहास-लेखन के लिए डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डॉ० मोहन अवस्थी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

➤ शुक्लोत्तर (छायावादोत्तर) युग

सन् 1936 ई० के बाद देश की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हुआ और हम कल्पना के लोक से उतरकर ठोस जमीन पर आने की चेष्टा करने लगे थे। राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित लेखकों ने यथार्थवादी जीवन-दर्शन को महत्त्व देना

आरम्भकिया। छायावादी युग के कई लेखक नयी भूमि पर पदार्पण कर नवीन युग-चेतना के अनुसार साहित्य-रचना में प्रवृत्त हुए। फलस्वरूप 1938 ई0 के बाद के साहित्य को छायावादोत्तर कहा गया है। इस युग में साहित्यकारों की दो पीढ़ियाँ साहित्य-रचना में प्रवृत्त हैं। एक पीढ़ी उन साहित्यकारों की है जो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व से लिखते आ रहे थे और उसके बाद भी सक्रिय रहे हैं। दूसरी पीढ़ी उन लेखकों की है जो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद साहित्य-सृजन में प्रवृत्त हुए हैं। पहली पीढ़ी में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, रामधारीसिंह 'दिनकर', यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, जैनेन्द्र, अज्ञेय, नगेन्द्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', भगवतशरण उपाध्याय आदि गद्य लेखक हैं। दूसरी पीढ़ी में विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु', कुबेरनाथ राय, धर्मवीर भारती, शिवप्रसाद सिंह आदि उल्लेखनीय हैं।

विभिन्न विधाओं के लेखक एवं उनकी कृति

लेखक	कृति	विधा
● डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	कल्पलता	निबन्ध
● जैनेन्द्रकुमार	जड़ की बात	निबन्ध
● यशपाल	झूठा-सच	उपन्यास
● भगवतीचरण वर्मा	भूले-बिसरे चित्र	उपन्यास
● इलाचन्द्र जोशी	आहुति	कहानी
● राजेन्द्र यादव	प्रतीक्षा	कहानी
● उपेन्द्रनाथ अश्क	जय-पराजय	नाटक

गद्य-लेखकों की उक्त दोनों पीढ़ियों ने हिन्दी गद्य को सशक्त बनाया है, उसकी शब्द-सम्पदा में वृद्धि की है। उसे जीवन की बाह्य परिस्थितियों, सामाजिक सम्बन्धों, विसंगतियों, आधुनिक मानव के आन्तरिक द्वन्द्वों एवं तनावों को व्यक्त करने में सक्षम बनाया है, अनेक नवीन कलात्मक गद्य-विधाओं का विकास किया है और सब मिलाकर उसे राष्ट्रीय गरिमा प्रदान की है।

शुक्लोत्तर युग के निबन्धकारों में मानवतावादी दृष्टिकोण के सशक्त प्रतिपादक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार हैं। यात्रा सम्बन्धी निबन्धकारों में राहुल सांकृत्यायन और देवेन्द्र सत्यार्थी के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रभाकर माचवे, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', धर्मवीर भारती, अज्ञेय, दिनकर आदि ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया। पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम संस्मरणात्मक निबन्धकारों में अग्रगण्य है।

इस युग के **कहानीकारों** में अज्ञेय, जैनेन्द्रकुमार, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर आदि हैं। **उपन्यासकारों** में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, रांगेय राघव, उपेन्द्रनाथ, अश्क, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ 'रेणु' आदि का नाम इस युग के अन्तर्गत लिया जा सकता है। लक्ष्मीनारायण लाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ0 रामकुमार वर्मा, धर्मवीर भारती, रामवृक्ष बेनीपुरी, रांगेय राघव तथा वृन्दावनलाल वर्मा इस युग के ऐसे **नाटककार** हैं, जिन्होंने सामाजिक समस्याओं को अपने नाटकों का विषय बनाया।

प्रगतिवादी युग में सहज, व्यावहारिक और अलङ्कारविहीन गद्य की प्रतिष्ठा हुई। उसमें भावुकतापूर्ण अभिव्यक्ति का स्थान सतेज और चुटीली उक्तियों ने लिया। डॉ0 रामविलास शर्मा, शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त इस युग के लेखक हैं। रेखाचित्र और संस्मरण-लेखकों में पद्मसिंह शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी और कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी में इधर कुछ उत्कृष्ट साहित्यिक जीवन-चरित्र और आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई हैं। इनमें अमृत राय की 'कलम का सिपाही' और डॉ0 रामविलास शर्मा की 'निराला की साहित्य-साधना' उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। **आत्मकथाओं** में **डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद** की आत्मकथा के बाद **पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'** की **'अपनी खबर'** और **बच्चन** की **'क्या भूलूँ क्या याद करूँ'** व **'नीड़ का निर्माण'** आदि कृतियाँ लोकप्रिय हुई हैं।

आज निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि के अतिरिक्त डायरी, रिपोर्ताज, फैण्टेसी, रेडियोरूपक आदि कितनी ही नयी विधाओं के अन्तर्गत उत्तमोत्तम साहित्य की रचना हो रही है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रतिवर्ष जो शोध-प्रबन्ध निकल रहे हैं, उनके द्वारा वैज्ञानिक विवेचन, विश्लेषण तथा मूल्यांकन के लिए पूर्ण सक्षम हिन्दी गद्य का स्वरूप विकसित हो रहा है। अब हिन्दीतर प्रदेशों के लेखक भी हिन्दी में रुचि लेने लगे हैं। विदेशों में भी हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है और उसके विश्व-स्तर पर प्रतिष्ठित होने की सम्भावना बढ़ गयी है।

|| हिन्दी गद्य की विधाएँ ||

➤ निबन्ध

निबन्ध वह गद्य विधा है, जिसमें लेखक सीमित आकार में किसी विषय की सर्वांगीण, स्वच्छन्द एवं सुव्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत करता है। गद्य की नवीन विधाओं में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा विकसित विधा है। आलोचकों ने निबन्ध को वास्तव में गद्य की कसौटी कहा है। निबन्ध का प्रयोग दार्शनिक तथा बौद्धिक अभिव्यक्ति के लिए होता था, किन्तु आधुनिक हिन्दी निबन्ध संस्कृत के निबन्ध से पूर्णतया भिन्न है तथा अंग्रेजी के 'एस्से' के अधिक निकट है। गद्य की भाषा की अभिव्यञ्जना-शक्ति का सबसे अधिक प्रसार इसी विधा से होता है। इसके विषय की सीमा मानव-जीवन के समान ही विस्तृत है। यद्यपि इसमें बुद्धि-तत्त्व की प्रधानता रहती है, तथापि उसका सम्बन्ध हृदय-तत्त्व से बना रहता है। निबन्ध में लेखक का व्यक्तित्व प्रमुख होता है। यह निबन्धकार के मानस का उस समय का चित्र है, जिस समय वह किसी विषय से प्रभावित होता है। इसमें लेखक किसी भी विषय का पूर्ण विवेचन, विश्लेषण, परीक्षण, व्याख्या तथा मूल्यांकन करता है। विषय तथा शैली के अनुसार इसके चार भेद होते हैं—

(i) **विचारात्मक निबन्ध—**इस प्रकार के निबन्ध में बुद्धि-तत्त्व की प्रधानता होती है तथा विचार कस-कसकर भरे जाते हैं। इसमें तर्कपूर्ण विवेचन, विश्लेषण एवं गवेषणा का आधिपत्य होता है तथा विषय भी अधिकांश में दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शास्त्रीय, विवेचनात्मक आदि होते हैं। इसके लेखन के लिए चिन्तन, मनन तथा अध्ययन की अधिक अपेक्षा होती है। प्रस्तुत संकलन में रामचन्द्र शुक्ल कृत **'मित्रता'**, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का **'भारतीय संस्कृति'** इसी प्रकार के निबन्ध हैं।

(ii) **भावात्मक निबन्ध—**इन निबन्धों में हृदय-तत्त्व अथवा रागात्मकता का प्राधान्य होता है। इनका लक्ष्य पाठक की बुद्धि की अपेक्षा उसके हृदय को प्रभावित करना होता है। इसकी भाषा सरल, सुन्दर, ललित तथा मधुर होती है तथा भावों को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए कल्पना तथा अलङ्कारों का भी समुचित प्रयोग किया जाता है। इनका वाक्य-विन्यास सरल तथा शैली कवित्वपूर्ण होती है।

(iii) **वर्णनात्मक निबन्ध—**इन निबन्धों में किसी भी वर्णनीय वस्तु, स्थान, व्यक्ति, दृश्य आदि का निरीक्षण के आधार पर आकर्षक, सरस तथा रमणीय रूप में वर्णन होता है। इनकी शैली दो प्रकार की होती है। एक में यथार्थ वर्णन तथा दूसरी में अलंकृत वर्णन होता है। यथार्थ वर्णन सूक्ष्म निरीक्षण तथा निजी अनुभूति के आधार पर होता है तथा अलंकृत वर्णन में कल्पना का प्रयोग होता है। इन निबन्धों में चित्रात्मकता, रोचकता, कौतूहल तथा मानसिक प्रत्यक्षीकरण कराने की क्षमता होती है। इनकी शैली भी प्रायः सरस, सुबोध तथा सरल होती है।

(iv) **विवरणात्मक निबन्ध—**इन निबन्धों में प्रायः ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं, स्थानों, दृश्यों, यात्राओं तथा जीवन के अन्य विविध कार्य-कलापों का विवरण दिया जाता है। इनमें आख्यानात्मकता का पुट रहता है तथा विषयवस्तु के प्रत्येक ब्योरे का सुसम्बद्ध विवरण रोचक, हृदयग्राही तथा क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इनकी शैली सरल, आकर्षक, भावानुकूल, व्यावहारिक तथा चित्रात्मक होती है। प्रस्तुत संकलन में 'अजन्ता' इस प्रकार के निबन्ध का उदाहरण है।

➤ कहानी

कहानी उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें पात्रों के चरित्र-चित्रण एवं घटनाओं के माध्यम से मानव या समाज के किसी आदर्श, चरित्र, भाव या गुण विशेष को संक्षिप्त या कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह आधुनिक साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। इसका लक्ष्य किसी पात्र, घटना, भाव, संवेदना आदि की मार्मिक अभिव्यञ्जना करना होता है। इसका

शीर्षक आकर्षक तथा रोचक होता है जो कहानी के मूल भाव अथवा संवेदना की व्यञ्जना करने में समर्थ होता है। कहानी तथा उपन्यास की विधा एक-दूसरे से भिन्न है। कहानी कलात्मक छोटी रचना होती है, जो बड़े-से-बड़े भाव की व्यञ्जना करने में समर्थ होती है। इसका आरम्भ तथा अन्त कलात्मक एवं प्रभावपूर्ण होता है।

विषयवस्तु के आधार पर हिन्दी की कहानियों का विभाजन इस प्रकार से हो सकता है—ऐतिहासिक, सामाजिक, यथार्थवादी, दार्शनिक, प्रतीकवादी, मनोवैज्ञानिक, हास्य-व्यंग्य प्रधान आदि। कहानी के तत्त्वों में किसी एक की प्रधानता के आधार पर इनका विभाजन घटना-प्रधान, भाव-प्रधान तथा वातावरण-प्रधान के रूप में किया जाता है। कहानी-लेखन में प्रायः कथात्मक, आत्म-चरित्र-प्रधान, पत्रात्मक, डायरी, नाटकीय, मिश्रित आदि शैलियों का प्रयोग किया जाता है। प्रसाद, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, शिवानी, कृष्णा सोबती आदि कुछ प्रसिद्ध कहानीकार हैं। इस संकलन में रखी गयी प्रसाद की कहानी **'ममता'** एक श्रेष्ठ कहानीकार की शैलीगत विशिष्टताओं का परिचय कराती है।

➤ लघु कथा

गद्य के क्षेत्र में लघु कथा धीरे-धीरे एक विधा के रूप में स्वयं को स्थापित करती जा रही है। इसमें आधुनिक संवेदना की गहरी पीड़ा दिखाई पड़ती है। लघु कथा के कथाकारों में राजेन्द्र यादव, चित्रा मुद्‌गल, विष्णु नागर, असगर वजाहत, रमेश बतरा के नाम उल्लेखनीय हैं।

➤ भेंटवार्त्ता

भेंटवार्त्ता के लिए हिन्दी में 'भेंट', 'चर्चा', 'विशेष परिचर्चा', 'साक्षात्कार' तथा 'इण्टरव्यू' नाम प्रचलित हैं। 'इण्टरव्यू' का शाब्दिक अर्थ है 'आन्तरिक दृष्टिकोण'। इस प्रकार भेंटवार्त्ता वह विधा है, जिसके माध्यम से भेंटकर्त्ता किसी महान् व्यक्ति के मन और जीवन में प्रश्नों के झरोखे से झाँककर उसके आन्तरिक दृष्टिकोण को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

भेंटवार्त्ता वास्तविक भी होती है और काल्पनिक भी। हिन्दी में वास्तविक और काल्पनिक दोनों ही प्रकार की भेंटवार्त्ताएँ लिखी गई हैं। वास्तविक भेंटवार्त्ता लिखनेवालों में पद्‌मसिंह शर्मा 'कमलेश' और रणवीर रांग्रा के नाम उल्लेखनीय हैं और काल्पनिक भेंटवार्त्ता लिखनेवालों में राजेन्द्र यादव **(चैखव : एक इण्टरव्यू)** और लक्ष्मीचन्द्र जैन **(भगवान् महावीर : एक इण्टरव्यू)** उल्लेखनीय हैं। भेंटवार्त्ताएँ छायावादोत्तर युग में ही लिखी गई हैं। शिवदान सिंह चौहान तथा रामचरण महेन्द्र ने भी इस क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।

➤ उपन्यास

उपन्यास वर्तमान हिन्दी साहित्य की सर्वप्रिय विधा है। उपन्यास के स्वरूप में साहित्य की सभी विधाओं को सन्निहित करने की क्षमता है। उपन्यास में कथा तो है ही, साथ ही अवसर आने पर वह काव्य की-सी भावुकता और संवेदना जाग्रत कर पाठकों को तल्लीन करता है।

श्रीनिवास द्वारा रचित **'परीक्षा गुरु'** हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है। इस युग के उपन्यास में गम्भीरता का प्रायः अभाव है तथा वे घटनाप्रधान हैं। इस युग के प्रमुख उपन्यासकार और उनके उपन्यास हैं–बालकृष्ण भट्ट **(नूतन ब्रह्मचारी)**; देवकीनन्दन खत्री **(चन्द्रकान्ता सन्तति** और **भूतनाथ)**; गोपालदास गहमरी **(नये बाबू, चतुर चंचला)**; किशोरीलाल गोस्वामी **(तारा, सुल्ताना, सोना और सुगन्ध)**।

प्रेमचन्द युग में मुंशी प्रेमचन्द ने **'सेवासदन', 'निर्मला', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान',** जयशंकर प्रसाद ने **'कंकाल', 'तितली', 'इरावती'** (अपूर्ण) जैसे सशक्त उपन्यास हिन्दी को दिये। इनके अतिरिक्त इस युग के प्रमुख उपन्यासकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', भगवतीचरण वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा आदि हैं। प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनके उपन्यास इस प्रकर हैं–जैनेन्द्र **(परख, सुनीता, त्यागपत्र)**; इलाचन्द्र जोशी **(जहाज का पंछी, घृणापथ)**; अज्ञेय **(शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप)**। इस युग के अन्य उपन्यासकार हैं–यशपाल, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, धर्मवीर भारती, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', फणीश्वरनाथ 'रेणु', रामदरश मिश्र, राही मासूम रजा, शिवानी, शैलेश मटियानी, उषा प्रियंवदा आदि।

➤ आलोचना

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है– ''किसी पदार्थ, तथ्य आदि की परख सही रूप में करना या उसे भली प्रकार देखना।''

भली-भाँति देखने से ही किसी वस्तु के गुण-दोष प्रकट होते हैं, इसीलिए किसी साहित्यिक रचना का सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन करते हुए उसके गुण-दोषों को प्रकट करना उसकी आलोचना कहलाता है।

यद्यपि भारतेन्दुजी के समय में ही अनूदित पुस्तकों की समीक्षाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं, किन्तु हिन्दी-आलोचना की अविच्छिन्न परम्परा का सूत्रपात द्विवेदी युग से ही प्रारम्भ होता है। **'कालिदास की निरंकुशता'** में द्विवेदीजी ने गुण-दोष दिखानेवाली शैली में भाषा और व्याकरण के दोषों का संग्रह किया है। इसी युग में मिश्रबन्धुओं ने **'हिन्दी नवरत्न'** नाम से एक आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित किया था।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के युगद्रष्टा आलोचक रहे हैं। शुक्लजी ने साहित्य के सभी अंगों का सैद्धान्तिक विवेचन करके एक सम्पूर्ण साहित्यशास्त्र का निर्माण किया। बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपनी पुस्तक **'साहित्यालोचन'** में साहित्य सिद्धान्तों का और पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने **'विश्व-साहित्य'** में विश्व के साहित्य मुख्यतः अंग्रेजी साहित्य का गम्भीर विवेचन किया है।

प्रगतिवादी युग के प्रमुख आलोचकों में शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त, डॉ० रामविलास शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, अमृतराय, शमशेरबहादुर सिंह आदि हैं। इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय और एक सीमा तक नलिनविलोचन शर्मा आदि मनोविश्लेषणात्मक आलोचना के प्रमुख लेखक हैं। आधुनिक-साहित्य और नई कविता के आलोचकों में डॉ० इन्द्रनाथ मदान, डॉ० नामवर सिंह, डॉ० जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकान्त वर्मा आदि के नाम विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

➤ नाटक

रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोंवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। नट (अभिनेता) से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र-विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी 'ड्रामा' या 'प्ले' का पर्याय बन गया है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छायावाद-युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया। छायावादोत्तर-युग में लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, डॉ० रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है।

➤ एकांकी

नाटक का एक महत्त्वपूर्ण रूप एकांकी है। 'एकांकी' किसी एक महत्त्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को आधार बनाकर लिखा जाता है और उसकी समाप्ति एक ही अंक में उस घटना के चरम क्षणों को मूर्त करते हुए कर दी जाती है। हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास छायावाद युग से माना जाता है। सामान्यतः श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की भी रचना की है। डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित 'दीपदान', 'रेशमी टाई' तथा उपेन्द्रनाथ अश्क के 'तौलिये', 'अंधी गली' प्रमुख एकांकी हैं।

➤ जीवनी

यह साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें किसी महापुरुष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उसके कार्य-कलापों तथा अन्य गुणों का आत्मीयता, औपचारिकता तथा गम्भीरता से व्यवस्थित रूप में वर्णन किया जाता है। इसमें व्यक्ति विशेष के जीवन की छोटी-से-छोटी बात तथा बड़ी-से-बड़ी बात का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक उसके अन्तरंग जीवन से परिचित ही नहीं होता, वरन् तादात्म्य भी स्थापित कर लेता है। जीवनीकार जीवनी में प्रायः उन स्थलों पर विशेष बल देता है, जिनके द्वारा पाठक प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को अधिक उन्नतिशील बनाने में समर्थ हो सके। जीवनी का प्रामाणिक होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब जीवनीकार को उस व्यक्ति के जीवन के विभिन्न स्वरूपों, तथ्यों तथा घटनाओं का निजी तथा पूर्ण ज्ञान हो। जीवनी में जहाँ एक ओर इतिहास जैसी प्रामाणिकता तथा तथ्यपूर्णता होती है, वहीं दूसरी ओर वह साहित्यिकता के तत्त्वों से पूर्ण होती है। हिन्दी के जीवनी-साहित्य को समृद्ध बनानेवालों में गुलाबराय, रामनाथ सुमन, डॉ० रामविलास शर्मा, अमृत राय आदि जीवनीकार उल्लेखनीय हैं।

➤ आत्मकथा

यह विधा भी जीवनी के समान ही लोकप्रिय है। इसका लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा को पाठकों के समक्ष

आत्मीयता के साथ रखता है। यह संस्मरणात्मक होती है। लेखक अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा दशाओं में अपने मानसिक तथा भावात्मक विकास की कहानी कहता है। उसका यह वर्णन उसके जीवनकाल की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में होता है। वह अपने जीवन में घटी हुई महत्त्वपूर्ण तथा मार्मिक घटनाओं का ही क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत नहीं करता, वरन् अपने जीवन पर पड़े हुए विभिन्न प्रभावों का भी उल्लेख करता चलता है। इसमें लेखक अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है तथा यह भी बताता है कि अपने समय की विचारधारा को उसने क्या निजी योगदान दिया है। महापुरुषों द्वारा लिखी गयी आत्मकथाएँ पाठकों का मार्गदर्शन करती हैं तथा उन्हें प्रेरणा देती हैं। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है। साहित्यिक आत्मकथाओं में हरिवंशराय 'बच्चन' और पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कृतियाँ उत्कृष्ट मानी गयी हैं।

➤ पत्र-साहित्य

जब कोई लेखक अपने किसी मित्र, परिचित अथवा अल्प-परिचित व्यक्ति को अपने सम्बन्ध में या किसी महत्त्वपूर्ण समस्या के सम्बन्ध में उसकी और अपनी सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर तथा उसके प्रति उचित आदर, सम्मान या स्नेह का भाव प्रकट करते हुए निजी तौर पर पत्र लिखकर भेजता है और उत्तर की अपेक्षा रखता है तो वह पत्र-साहित्य का सृजन करता है।

पत्र व्यक्तिगत भी हो सकते हैं और सार्वजनिक भी। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजे जानेवाले पत्र प्रायः सार्वजनिक प्रश्नों को लेकर लिखे जाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वे पत्र अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं, जो तत्काल प्रकाशनार्थ नहीं लिखे जाते, वरन् दो व्यक्तियों की व्यक्तिगत सम्मति होते हैं। साहित्यिक दृष्टिकोण से ऐसे पत्रों को कुछ काल के पश्चात् प्रकाशित किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य में पत्र-प्रकाशन का आरम्भ द्विवेदी युग में ही हो गया था। महात्मा मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सम्बन्धी पत्रों का संकलन सन् 1904 ई0 में प्रकाशित कराया था। छायावादी युग में 'रायकृष्ण आश्रम, देहरादून' से **'विवेकानन्द पत्रावली'** का प्रकाशन किया गया था। छायावादोत्तर युग में पत्र-साहित्य के संकलन और प्रकाशन की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इस क्षेत्र में वैजनाथ सिंह 'विनोद' द्वारा संकलित **'द्विवेदी पत्रावली'** (सन् 1954 ई0); बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संकलित **'पद्मसिंह शर्मा के पत्र'** (सन् 1956 ई0); वियोगी हरि द्वारा **'बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र'**; तथा हरिवंशराय बच्चन के द्वारा **'पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम'** उल्लेखनीय पत्र-संकलन हैं।

➤ डायरी

डायरी लेखन-कला का प्रारम्भ लगभग सन् 1930 ई0 के आस-पास माना जाता है। नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ को प्रथम डायरी लेखक माना जाता है। उनकी डायरी **'नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ की जेल डायरी'** के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी में डायरी लेखन-कला का उदय हुआ था। छायावादी युग में धीरेन्द्र वर्माकृत **'मेरी कॉलेज डायरी'** उल्लेखनीय है। छायावादोत्तर युग में इलाचन्द्र जोशी, रामधारीसिंह 'दिनकर', शमशेरबहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि की डायरियाँ प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में गद्य की इस कलात्मक विधा का अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है, लेकिन यह अपने विकास-पथ पर अग्रसर है तथा भविष्य में इसके विकसित होने की पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं।

➤ रेखाचित्र

रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का अनुवाद है तथा दो शब्दों 'रेखा' और 'चित्र' के योग से बना है। इसमें शब्दों की कलात्मक रेखाओं द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आन्तरिक स्वरूप का शब्द-चित्र इस प्रकार अंकित किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाता है। रेखाचित्र में चित्रकला तथा साहित्य का सुन्दर सामंजस्य दिखायी पड़ता है। जिस प्रकार चित्रकार तूलिका तथा रंगों के माध्यम से किसी सजीव चित्र का निर्माण करता है, उसी प्रकार रेखाचित्रकार शब्दों के द्वारा ऐसा भावपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है, जो उसकी वास्तविक संवेदना को मूर्त रूप प्रदान करने में सफल होता है।

रेखाचित्र कहानी तथा निबन्ध के बीच की विधा है, किन्तु तात्त्विक रूप में यह दोनों से भिन्न है और इसकी अपनी ही एक विशिष्ट कला है। निबन्ध तथा रेखाचित्र दोनों में कल्पना, अनुभूति, शब्द-व्यञ्जना, प्रतीक आदि का समावेश होता है, किन्तु इनका प्रयोग रेखाचित्रों में अधिक होता है। रेखाचित्र का आकार भी निबन्ध से प्रायः छोटा होता है। महादेवी वर्मा, अमृत राय, प्रकाशचन्द्र गुप्त आदि ने अच्छे रेखाचित्रों का सृजन किया है।

➤ संस्मरण

संस्मरण का अर्थ है 'सम्यक् स्मरण'। संस्मरण में लेखक स्वयं अपनी अनुभव की हुई किसी वस्तु, व्यक्ति तथा घटना का आत्मीयता तथा कलात्मकता के साथ विवरण प्रस्तुत करता है। इसका सम्बन्ध प्रायः महापुरुषों से होता है। इसमें लेखक अपनी अपेक्षा उस व्यक्ति को अधिक महत्त्व देता है, जिसका वह संस्मरण लिखता है। इसमें किसी विशिष्ट व्यक्ति का स्वरूप, आकार-प्रकार, स्वभाव, भाव-भंगिमा, व्यवहार, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध, बातचीत आदि सभी बातों का विश्वसनीय रूप में आत्मीयता के साथ वर्णन होता है। रेखाचित्र में किसी के चरित्र का कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया जाता है, किन्तु संस्मरण में किसी के चरित्र का यथातथ्य रूप प्रदर्शित किया जाता है। हिन्दी के प्रमुख संस्मरण लेखकों में श्री नारायण चतुर्वेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी, पद्मसिंह शर्मा आदि हैं। श्री हरिभाऊ उपाध्याय के **'आचार्य द्विवेदीजी'** नामक संस्मरणात्मक निबन्ध को इस विधा के प्रतिनिधि निबन्ध के रूप में रखा गया है।

➤ यात्रा-साहित्य

यह साहित्य की एक रोचक तथा मनोरंजन-प्रधान विधा है। इसमें लेखक विशेष स्थलों की यात्रा का सरस तथा सुन्दर वर्णन इस दृष्टि से करता है कि जो पाठक उन स्थलों की यात्रा करने में समर्थ न हों, वे उसका मानसिक आनन्द उठा सकें और घर बैठे ही उन स्थलों के प्राकृतिक दृश्यों, वहाँ के निवासियों के आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन आदि से परिचित हो सकें। इस विधा का यह लक्ष्य रहता है कि लेखक अपनी यात्रा में प्राप्त किये हुए आनन्द तथा ज्ञान को पाठकों तक पहुँचा सके। यह विधा आत्मपरक, अनौपचारिक, संस्मरणात्मक तथा मनोरंजक होती है। इसकी सफलता लेखक के स्वरूप-निरीक्षण तथा उसकी वर्णन-शैली के सौष्ठव एवं सौन्दर्य पर अधिक निर्भर रहती है। इसमें लेखक अपनी यात्रा की कठिनाई, सम्बन्धों तथा उपलब्धियों का रोचक विवरण पाठकों के समक्ष रखता है। यात्रा-साहित्य की रचना की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन, 'अज्ञेय', देवेन्द्र सत्यार्थी, डॉ० नगेन्द्र, यशपाल और विनयमोहन शर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

➤ रिपोर्ताज

रिपोर्ताज मूलतः फ्रांसीसी शब्द है और अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' शब्द का पर्यायवाची तथा साहित्यिक नाम है। रिपोर्ताज में किसी घटना का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक उससे प्रभावित हो जाता है। रिपोर्ताज के लेखक को अपने वर्ण्य-विषय का पूर्ण ज्ञान होता है। वह इस प्रकार लिखता है कि वह जो कुछ लिख रहा है, मानो आँखों-देखा ही हो। इसमें कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं तथा पाठकों की विशिष्टताओं का निजी सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर मनोवैज्ञानिक विवेचन तथा विश्लेषण होता है।

इसकी शैली विवरणात्मक तथा वर्णनात्मक होती है, जिसमें सरलता, रोचकता, आत्मीयता तथा प्रभावपूर्णता का विशेष महत्त्व होता है। इसमें लेखक प्रतिपाद्य विषय को सरसता तथा सरलता से पाठक को हृदयंगम कराने में सफल होता है। पत्रकारिता के गुणों से सम्पन्न रिपोर्ताज का लेखक इसमें अधिक सफल होता है। विष्णु प्रभाकर, प्रकाशचन्द्र गुप्त, प्रभाकर माचवे आदि ने कुछ अच्छे रिपोर्ताज लिखे हैं।

➤ गद्य-काव्य

छन्दमुक्त एवं कविता के गुणों से युक्त रचना को गद्यगीत कहते हैं। यह गद्य तथा काव्य के बीच की विधा है। गद्य-काव्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है। गद्य-काव्य सामान्य गद्य से अधिक सरस, भावात्मक, अलंकृत, संवेदनात्मक तथा संगीतात्मक होता है। इसमें लेखक अपने हृदय की संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर रसमय हो जाता है। इसमें विचारों की अभिव्यक्ति की ओर लेखक का अधिक ध्यान रहता है। यह निबन्ध की अपेक्षा संक्षिप्त, वैयक्तिक तथा एकतथ्यता लिये होता है। इसका ध्येय प्रायः निश्चित होता है तथा इसमें केवल एक ही केन्द्रीय भाव की प्रधानता होती है। गद्य-काव्य की शैली प्रायः चमत्कारपूर्ण एवं कवित्वपूर्ण होती है तथा इसमें विचारों का समावेश भी प्रायः भावों के ही रूप में होता है। गद्य-काव्य के लेखकों में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, वियोगी हरि, रायकृष्णदास तथा रामवृक्ष बेनीपुरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त चतुरसेन शास्त्री, सुदर्शन, रघुवीर सिंह, रामवृक्ष बेनीपुरी ने सशक्त गद्य-काव्य प्रदान किये हैं।

हिन्दी गद्य के विकास से सम्बन्धित प्रश्न

1. भाषा-योगवाशिष्ठ के लेखक का नाम लिखिए।
2. आधुनिककाल की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. प्रगतिवादी युग की दो विशेषताओं को लिखिए।
4. किसी एक रिपोर्ताज लेखक का नाम लिखिए। **(2020HF)**
5. शुक्लोत्तर युग की समय-सीमा बताइए।
6. 'बालबोधिनी' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
7. किसी एक संस्मरण-लेखक का नाम लिखिए।
8. शुक्लोत्तर युग के किसी एक साहित्यकार का नाम लिखिए।
9. दो आत्मकथा लेखकों के नाम लिखिए। **(2020ME)**
10. गद्य और पद्य में अन्तर बताइए।
11. हिन्दी के दो प्रसिद्ध विचारात्मक निबन्ध लेखकों के नाम लिखिए।
अथवा हिन्दी के दो प्रसिद्ध उपन्यासकारों के नाम लिखिए। **(2017AG, 19AC)**
12. खड़ीबोली गद्य के चार प्रारम्भिक उन्नायकों के नाम लिखिए।
13. भारतेन्दु युग के दो लेखकों के नाम लिखिए।
14. द्विवेदी युग के दो कहानीकारों के नाम लिखिए। **(2017AA, 19AF)**
15. रामचन्द्र शुक्ल को गद्य की किन दो विधाओं में सर्वाधिक सफलता मिली है?
16. हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानी-लेखकों के नाम लिखिए।
17. शुक्ल युग के सबसे प्रसिद्ध उपन्यास लेखक और उसके एक प्रमुख उपन्यास का नाम लिखिए।
18. शुक्ल-युग के सशक्त आलोचक एवं निबन्धकार का नाम लिखिए।
19. शुक्ल युग कब से कब तक माना जाता है?
20. शुक्ल युग को अन्य किन नामों से जाना जाता है?
21. शुक्ल युग के दो प्रमुख गद्यकारों के नाम लिखिए।
अथवा शुक्ल युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए।
22. शुक्ल युग (छायावाद युग) की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
23. वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक निबन्धों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।
24. शुक्ल युग (छायावाद युग) के किन्हीं दो ऐसे गद्य लेखकों के नाम लिखिए, जो कवि न हों।
25. ऐसे तीन गद्य-लेखकों के नाम लिखिए, जिन्होंने द्विवेदी युग तथा छायावादी युग दोनों में लेखन-कार्य किया।
26. शुक्ल युग के दो प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए।
27. शुक्ल युग के दो निबन्ध-लेखकों के नाम बताइए।
अथवा शुक्ल युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए।
अथवा किसी एक निबन्धकार का नाम लिखिए। **(2017AB)**
28. शुक्ल युग के दो नाटककारों के नाम लिखिए।
29. शुक्ल युग के दो उपन्यासकारों के नाम लिखिए।
अथवा उपन्यास विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए। **(2020ME)**
अथवा किसी एक निबन्धकार का नाम लिखिए।
30. शुक्ल युग के दो प्रमुख हिन्दी-साहित्य के इतिहासकारों के नाम लिखिए।
31. द्विवेदी युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए।
32. शुक्लोत्तर युग के किन्हीं दो समालोचकों के नाम लिखिए।

33. छायावादोत्तर (शुक्लोत्तर) युग की प्रमुख गद्य विधाओं का उल्लेख कीजिए।
34. शुक्लोत्तर युग के दो कहानीकारों के नाम बताइए।
35. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।
36. शुक्लोत्तर युग के दो निबन्धकारों के नाम बताइए। **(2020MF)**
37. शुक्लोत्तर युग के तीन एकांकीकारों के नाम बताइए।
अथवा किसी एक एकांकीकार का नाम लिखिए।
38. 'हंस' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए। **(2017AC)**
39. प्रेमचन्दोत्तर युग के किन्हीं दो कहानीकारों का नामोल्लेख कीजिए।
40. हिन्दी गद्य की किन्हीं चार प्रमुख विधाओं का उल्लेख करते हुए इनके प्रतिनिधि लेखकों का नामोल्लेख कीजिए।
41. 'कलम का सिपाही' किस साहित्यकार की जीवनी है?
42. किसी एक यात्रा-वृत्तान्त-लेखक का नाम लिखिए।
43. आलोचना क्षेत्र के दो लेखकों के नाम लिखिए।
44. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख जीवनी लेखकों एवं उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
45. शुक्लोत्तर युग के साहित्य की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
46. शुक्लोत्तर युग के दो गद्य-लेखकों के नाम लिखिए।
47. छायावादोत्तर-युगीन साहित्यकारों की दोनों पीढ़ियों के एक-एक साहित्यकार का नाम लिखिए।
48. हिन्दी गद्य की दो प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।
49. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की किसी एक रचना का नाम बताइए।
50. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख गद्य लेखकों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
51. प्रगतिवादी युग के दो लेखक और उनकी एक-एक रचना का नाम बताइए।
52. 'जहाज का पंछी' के लेखक का नाम लिखिए। **(2020MF)**
53. दो आत्म-कथा लेखकों के नाम लखिए।
54. 'ध्रुवस्वामिनी' और 'राज्यश्री' नाटकों के लेखक का नाम लिखिए।
55. 'अज्ञेय' की किसी एक रचना का नाम लिखिए।
56. 'उदय शंकर भट्ट' किस गद्य-विधा के प्रमुख लेखक हैं?
57. प्रसाद-युग के किसी एक नाटककार का नाम लिखिए।
58. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है?
59. आधुनिक हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख आलोचकों के नाम लिखिए।
अथवा समालोचना विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए।
60. यात्रा-साहित्य की एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए।
61. गोदान के लेखक का नाम लिखिए।
62. 'राहुल सांकृत्यायन' की एक रचना का नाम लिखिए।
63. गद्य-काव्य विधा की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
64. 'अपनी खबर', 'संस्कृति के चार अध्याय' एवं 'आँधी' के लेखकों के नाम लिखिए।
65. छायावादयुगीन गद्य की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
66. प्रेमचन्द के दो प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखिए।
67. हिन्दी साहित्य का विकास करनेवाली दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
68. जयशंकर प्रसाद के दो ऐतिहासिक नाटकों के नाम लिखिए।
69. शुक्ल युग के दो जीवनी लेखकों के नाम लिखिए।
अथवा किसी एक जीवनी लेखक का नाम लिखिए। **(2019AF)**
70. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख आलोचकों के नाम लिखिए।
71. शुक्ल युग की दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए। **(2020MG)**
72. रेखाचित्र तथा संस्मरण के लिए प्रसिद्ध एक-एक रचनाकार का नाम लिखिए।
73. गद्यगीत, जीवनी, आत्मकथा में से किसी एक विधा के प्रसिद्ध लेखक का नाम लिखकर उसकी एक कृति का उल्लेख कीजिए।

74. 'रेखाचित्र' और 'संस्मरण' विधाओं में अन्तर बताइए।
75. आत्मकथा की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
76. 'जीवनी' और 'आत्मकथा' की विधाओं में मुख्य अन्तर क्या है?
77. जयशंकर प्रसाद के किसी एक उपन्यास का नाम लिखिए।
78. विषय एवं शैली के अनुसार निबन्ध के किन्हीं दो भेदों का नामोल्लेख कीजिए।
79. 'क्या लिखूँ?' के लेखक कौन हैं?
80. 'मेरी असफलताएँ' के लेखक का नाम लिखिए।
81. 'कामायनी' किसकी रचना है?
82. 'परशुराम की प्रतीक्षा' के लेखक कौन हैं?
83. निम्नलिखित में से किसी एक विधा के एक प्रसिद्ध लेखक और उसकी एक कृति का नामोल्लेख कीजिए–
(i) नाटक (ii) निबन्ध (iii) आत्मकथा।
84. 'प्रिय-प्रवास', 'आकाशदीप', 'पंचपात्र' एवं 'ठलुआ क्लब' के लेखक का नाम बताइए।
85. 'रसमीमांसा', 'अजातशत्रु' एवं 'रश्मिरथी' के लेखक का नाम बताइए।
86. 'गोदान', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' एवं 'चिन्तामणि' के लेखक का नाम बताइए।
87. 'गोदान' और 'नासिकेतोपाख्यान' के रचनाकारों के नाम लिखिए।
88. शुक्ल युग के दो समालोचक एवं इतिहास लेखकों के नाम लिखिए।
89. प्रसाद के परवर्ती दो नाटककारों के नाम लिखिए।
90. 'खून के छींटे', 'शिक्षा और संस्कृति' एवं 'अर्द्धनारीश्वर' के रचनाकार का नाम लिखिए।
91. निम्नलिखित कृतियों में से किन्हीं दो लेखकों के नाम लिखिए–
(i) त्रिवेणी (ii) साधना के पथ पर (iii) साहित्य और कला।
92. यात्रा साहित्य के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए। **(2017AG, 19AC)**
अथवा किसी एक यात्रावृत्त लेखक का नाम लिखिए।
93. निम्नलिखित लेखकों की कृतियों का नाम लिखिए–
(i) जयप्रकाश भारती (ii) भगवतशरण उपाध्याय (iii) रामधारीसिंह 'दिनकर'।
94. निम्नलिखित कृतियों के लेखक का नाम बताइए– (i) त्यागपत्र (ii) रस-मीमांसा (iii) अथाह सागर।
95. निम्नलिखित कृतियों के लेखक का नाम बताइए– (i) प्रबन्ध पारिजात (ii) कंकाल (iii) खून के छींटे।
96. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक का नाम लिखिए। **(2020MF)**
97. 'सरस्वती' पत्रिका किस युग में प्रकाशित हुई? **(2020MA)**
98. 'मतवाला' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
99. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।
100. 'इन्दुमती' कहानी के लेखक का नाम लिखिए।
101. हिन्दी के दो संस्मरण-लेखकों के नाम लिखिए।
102. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) तीर्थ सलिल (ii) भारतीय शिक्षा (iii) मंदिर और भवन (iii) बर्फ की गुड़िया।
103. किसी एक रिपोर्ताज लेखक का नाम लिखिए। **(2020MB)**
104. 'दैनिकी' नामक डायरी के लेखक का नामोल्लेख कीजिए।
105. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) हिमालय की पुकार (ii) खून के छींटे (iii) हिन्दी-साहित्य-विमर्श (iii) अर्द्धनारीश्वर।
106. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) प्रबन्ध पारिजात (ii) भारतीय शिक्षा (iii) चिन्तामणि (iii) त्यागपत्र।
107. किसी एक एकांकी नाटक के लेखक का नाम लिखिए। **(2017AF, 19AB, AF)**
108. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) पंचपात्र (ii) साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति (iii) राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता (iii) रस मीमांसा।
109. किसी एक प्रसिद्ध आलोचक का नाम लिखिए।

110. 'त्यागपत्र' के रचनाकार का नाम लिखिए।
111. 'मर्यादा' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
112. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) रस-मीमांसा (ii) अर्द्धनारीश्वर (iii) हिमालय की पुकार (iv) आकाशदीप।
113. 'ठूँठा आम' के लेखक का नाम लिखिए।
114. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है? **(2017AG, 20MG)**
115. निम्नलिखित में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) अथाह सागर (ii) अर्द्धनारीश्वर (iii) मेरी असफलताएँ (iv) लहरों के राजहंस।
116. डॉ० रामकुमार वर्मा का प्रसिद्ध एकांकी का नाम लिखिए।
117. 'मेरी लद्दाख यात्रा' किस विधा पर आधारित रचना है?
118. 'अर्द्धनारीश्वर' किस विधा की रचना है?
119. 'मेरी कालेज डायरी' के लेखक का नाम लिखिए। **(2017AB, 20MC)**
120. 'जीवनी' विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए।
121. 'त्रिवेणी' किस विधा की रचना है?
122. 'मेरी यूरोप यात्रा' के लेखक का नाम लिखिए। **(2019AE)**
123. निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का नाम लिखिए–
(i) मैला आँचल (ii) मेरी यूरोप यात्रा (iii) रेती के फूल (iv) साहित्य और कला।
124. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) आवारा मसीहा (ii) कुटज (iii) ठूँठा आम (iv) ग्यारह वर्ष का समय।
125. किसी एक रेखाचित्र लेखक का नाम लिखिए।
126. 'उसने कहा था' किस विधा की रचना है?
127. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के लेखक का नाम लिखिए।
128. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) इन्दुमती (ii) माटी की मूरतें (iii) साहित्यालोचन (iv) ठलुआ क्लब।
129. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) सूरज का सातवाँ घोड़ा (ii) आवारा मसीहा (iii) दुनिया रंग-बिरंगी (iv) अनामदास का पोथा।
130. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) चिन्तामणि (ii) अजातशत्रु (iii) खून के छींटे (iv) पैरों में पंख बाँधकर।
131. निम्नलिखित में से किसी एक रचना के लेखक का नाम लिखिए–
(i) रस-मीमांसा (ii) तितली (iii) अर्द्धनारीश्वर (iv) गाँधीजी की देन।
132. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) एक घूँट (ii) पंचपात्र (iii) शिक्षा एवं संस्कृति (iv) अनन्त आकाश।
133. निम्नलिखित में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) भोर का तारा (ii) भाषा-विज्ञान (iii) पतितों के देश में (iv) मृगनयनी।
134. निम्नलिखित में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) मकरन्द बिन्दु (ii) इन्द्रजाल (iii) रसमीमांसा (iv) झाँसी की रानी।
135. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) हिमालय की पुकार (ii) गेहूँ और गुलाब (iii) मेरी असफलताएँ (iv) अर्द्धनारीश्वर।
136. 'कलम का सिपाही' के लेखक का नाम लिखिए। **(2019AC)**
137. गद्य-साहित्य का विविध रूपों में विकास किस काल में हुआ?
138. 'प्रेमचन्द अपने घर में' किस विधा की रचना है?
139. हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत एक उपन्यास का नाम लिखिए।
140. 'किन्नर देश में' रचना किस विधा पर आधारित है?
141. यशपाल की किसी एक रचना का नाम लिखिए।

142. किसी एक नाटककार का नाम लिखिए।
143. 'आवारा मसीहा' किस विधा की रचना है?
144. 'गाँधीजी की देन' कृति के लेखक का नाम लिखिए।
145. 'कलम का सिपाही' किस विधा की कृति है?
146. 'किन्नर देश में' कृति के लेखक का नाम लिखिए।
147. डॉ० भगवतशरण उपाध्याय की किसी एक रचना का नाम लिखिए।
148. किसी एक कहानीकार का नाम लिखिए।
149. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक का नाम बताइए। **(2017AA, AC, 20ME)**
150. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस साहित्यकार की आत्मकथा है? **(2017AA,AF)**
151. सेवासदन, मैला आँचल एवं चन्द्रगुप्त कृति के लेखक का नाम लिखिए।
152. 'इण्डिया इन कालिदास', उजली आग, तीर्थ सलिल एवं एक घूँट के लेखक का नाम लिखिए।
153. 'बर्फ की गुड़िया' के रचयिता का नाम लिखिए। **(2020MC)**
154. प्रायश्चित के लेखक का नामोल्लेख कीजिए।
155. 'देश' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
156. तितली, बिखरे पन्ने, रेती के फूल, मन्दिर और भवन के रचनाकार का नाम लिखिए।
157. डायरी विधा के लेखकों में से किसी एक लेखक का नाम लिखिए।
अथवा किसी एक डायरी लेखक का नाम लिखिए। **(2019AD, AG)**
158. 'दीपदान' एकांकी के लेखक का नाम लिखिए। **(2020MG)**
159. शुक्लोत्तर युग की हिन्दी पत्रिका के किसी एक सम्पादक का नाम लिखिए।
160. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम बताइए– (i) इन्द्रजाल, (ii) सेवा-सदन, (iii) दीपदान, (iv) मिट्टी ओर।
161. रेखाचित्र साहित्य के किन्हीं दो लेखक के नाम लिखिए। **(2019AA)**
162. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किस विधा की रचना है?
163. 'पथ के साथी' किस विधा की रचना है?
164. 'शेखर एक जीवनी' किस विधा की रचना है?
165. 'मतवाला' एवं 'देश' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए। **(2017AD)**
166. भेंटवार्त्ता विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए। **(2020MD)**
167. किसी एक महिला कहानीकार का नाम लिखिए। **(2020MC)**
168. 'रेशमी टाई' किस विधा पर आधारित रचना है? **(2020MD,ME)**
169. 'भूले-बिसरे चित्र' के रचनाकार का नाम लिखिए। **(2020MD)**
170. 'नीड़ का निर्माण फिर' किस गद्य विधा पर आधारित रचना है? **(2020MB)**
171. 'वट पीपल' के रचयिता का नामोल्लेख कीजिए। **(2020MB)**
172. 'ठलुआ क्लब' के लेखक का नाम लिखिए। **(2020MA)**
173. 'यात्रा के पन्ने' किस विधा पर आधारित रचना है? **(2020MA)**

●●

|| अध्ययन-अध्यापन ||

विद्यार्थीगण अनुभव कर रहे होंगे कि कक्षा 10 के हिन्दी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पाठों के चयन में कुछ अन्तर आ गया है, ऐसा इसलिए है कि वे निम्न माध्यमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुँच गये हैं। उसके अनुरूप अध्ययन के लिए चुने गये पाठों का स्तर उठ गया है। बात यह है कि निम्न माध्यमिक स्तर तक की हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में भाषा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उद्देश्य यह होता है कि उनके अध्ययन से विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा के व्यवहृत रूप का ज्ञान हो और उसके शुद्ध रूप को बोलने, लिखने का अच्छी तरह अभ्यास हो जाय। हिन्दी भाषा के व्याकरण का क्रमिक ज्ञान कराना भी इस स्तर पर हिन्दी पढ़ाने का एक विशेष उद्देश्य होता है।

अब उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का परिचय हिन्दी साहित्य के विविध रूपों से कराया जाना अभीष्ट है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यार्थी इस स्तर पर और इसके आगे भी, हिन्दी के सुविख्यात लेखकों और कवियों की मूल रचनाओं का अध्ययन करेंगे। ध्यान में रखने की बात है कि ये रचनाएँ, पूर्व कक्षाओं की भाँति, केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं लिखी गयी हैं। उनका लक्ष्य पाठक या अध्येता पूरा समाज है। ये रचनाएँ लेखक की सहज प्रेरणा से लिखी गयी हैं। लेखक में लिखने की प्रेरणा क्यों होती है। यह प्रश्न स्वाभाविक है। लेखक को उसके चारों ओर की परिस्थितियों से ही लिखने की प्रेरणा प्राप्त होती है। समाज में रहने के कारण सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से वह प्रभावित होता है, उसके संवेदनशील मन में तरह-तरह के भाव या विचार उठते हैं। इन्हीं भावों और विचारों की अभिव्यक्ति वह अपनी रचनाओं में करता है, जो विविध साहित्यिक रूपों में हमें पढ़ने को मिलता है।

यदि विद्यार्थीगण चाहते हैं कि कक्षा में हिन्दी की पढ़ाई से पूरा लाभ उठायें तो आवश्यक है कि इसके लिए वे पूरी तैयारी करके कक्षा में जायँ। विद्यार्थियों को चाहिए कि जो पाठ अगले दिन पढ़ाया जानेवाला है, उसे घर से पढ़कर जायँ। बहुत सम्भव है कि पाठ की सभी बातें उनकी समझ में न आयें। पाठ में ऐसे कठिन शब्द हो सकते हैं जिनका सामना आज से पहले छात्रों को कभी नहीं हुआ हो, ऐसे वाक्य हो सकते हैं जो इनको अटपटे अथवा अस्पष्ट लगें। ऐसे विचार या भाव हो सकते हैं जो इनकी समझ के ऊपर हों।

ऐसी सभी कठिनाइयों को अलग लिख लें। कक्षा में जब पाठ का अध्ययन हिन्दी अध्यापक के निर्देशन में चलने लगे तो अपनी पहले से नोट की गयी कठिनाइयों को ध्यान में रखें। कुछ कठिनाइयाँ ऐसी होंगी जिनका समाधान विद्यार्थियों को कक्षा के अध्ययन-क्रम में स्वयं ही मिल जायगा। शेष कठिनाइयाँ अपने सहपाठियों अथवा विषय-अध्यापक के सामने रखकर उनका समाधान पा सकते हैं। विद्यार्थियों की सजगता पर सब कुछ निर्भर करता है।

हिन्दी-शिक्षण की अपनी खास विधि है, पर उसका अनुगमन वर्तमान परिस्थितियों में प्रायः नहीं हो पाता। चाहिए तो यह कि पहले अध्यापक पढ़ाये जानेवाले पाठ के लिए विद्यार्थियों को मानसिक रूप से तैयार करें, पहले पढ़ाई गयी समान विषयवस्तु से पाठ को सम्बद्ध करें, फिर पाठ को टुकड़ों में बाँटकर एक-एक टुकड़े को विद्यार्थियों से मौन पाठ करायें, फिर पूरी कक्षा से प्रश्न पूछ कर आश्वस्त हो लें कि इनकी समझ में पाठ की विषयवस्तु आयी या नहीं। पूछे गये प्रश्नों का उत्तर कोई छात्र या छात्रा न दे सके तो स्वयं उत्तर स्पष्ट करें। फिर चुन-चुन कर कुछ छात्र/छात्राओं से अध्यापक पाठ का सस्वर पाठ करायें। तत्पश्चात् पाठ में आये कठिन शब्दों, वाक्यों आदि की विस्तृत व्याख्या कक्षा के सामने प्रस्तुत करें। अन्त में पाठ पर आधारित गृह-कार्य निर्धारित करें।

विद्यार्थियों के हित में है कि वे भाषा-दक्षता के उन सभी अंगों का अभ्यास अपने से करते रहें जिनका आरम्भ पिछली

कक्षाओं में कर चुके हैं। भाषा में मौखिक अथवा लिखित रूप में अभिव्यक्त विचारों को समझने की योग्यता का विस्तार निरन्तर अभ्यास पर निर्भर करता है। इसलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि अपने विचारों को दोनों रूपों में अभिव्यक्त करने का अभ्यास बनाये रखें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा की चारों दक्षताएँ अभ्यास-सापेक्ष हैं। भाषा का शुद्ध बोलना और लिखना अभ्यास से ही आता है।

प्रस्तुत **'हिन्दी गद्य'** के प्रत्येक पाठ के अन्त में उपयोगी प्रश्न दिये गये हैं। हर प्रश्न का उत्तर सम्बन्धित पाठ में मिलता है। ध्यानपूर्वक पाठ पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर मालूम करें और उन्हें लिख डालें। मौखिक उत्तर से लिखित उत्तर हमेशा अच्छा होता है। उन्हें अध्यापक से जाँच करा लें तो और भी उत्तम होगा। प्रश्नों के उत्तर लिखकर उन्हें सहेज कर रख लें। कुछ दिन पढ़ने पर त्रुटियों को स्वयं पकड़ लेंगे। शायद इसीलिए कहावत चल पड़ी है कि पढ़ना व्यक्ति को बहुज्ञ बनाता है, किन्तु लिखने के अभ्यास से उसका ज्ञान अधिक परिपूर्ण बनता है।

विविध भाषा-कौशलों का ध्यान रखते हुए माध्यमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं—

(1) विद्यार्थियों को मौन तथा व्यक्त पठन में कुशल बनाना। (2) उनके शब्द-भण्डार में पर्याप्त वृद्धि कराना। (3) उन्हें विविध स्थितियों के अनुरूप लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल बनाना। (4) उन्हें शुद्ध, सशक्त और प्रभावपूर्ण भाषा के प्रयोग में कुशल बनाना। (5) उन्हें विविध साहित्यिक विधाओं और भाषा-शैलियों से अवगत कराना। (6) उनमें भावात्मक और साहित्यिक सौन्दर्य की अनुभूत्यात्मक क्षमता का विकास करना। (7) उनमें भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की रुचि उत्पन्न करना। (8) उनमें समीक्षा-शक्ति का विकास करना।

उपर्युक्त में से प्रत्येक उद्देश्य को छात्र-छात्राओं में अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन के सन्दर्भ में विश्लेषण करने पर अनेक विशिष्ट उद्देश्य सामने आयेंगे। अध्यापकों को चाहिए कि वे किसी भी पाठ को पढ़ाने से पहले उसे स्वयं भली-भाँति पढ़ लें और देख लें कि इस पाठ में विषय-वस्तु, भाषा-शैली, व्याकरण, जीवन-मूल्यों आदि की दृष्टि से कौन-कौन सी बातें प्रमुख हैं जिनकी ओर छात्रों का ध्यान आकृष्ट कराना आवश्यक है।

प्रश्न और अध्यापकीय कथन ऐसे होने चाहिए जिनसे छात्रों को अन्य पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रेरणा मिले। जहाँ आवश्यक हो, बीच-बीच में विलोम, पर्याय, शब्द-रचना, पंक्तियों की व्याख्या, भाषा-शैली, चरित्र-चित्रण आदि से सम्बन्धित प्रश्न भी किये जायँ। शब्दार्थ-बोध कराने में व्युत्पत्तिमूलक अर्थ और प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाय। सम्पूर्ण कार्य यथासम्भव प्रश्नों के माध्यम से होना चाहिए और छात्रों को आत्माभिव्यक्ति का अवसर देना चाहिए। इससे कक्षा का वातावरण सजीव रहता है और पाठ में रोचकता बनी रहती है। अध्यापक को आवश्यकतानुसार श्यामपट्ट का भी उपयोग करते रहना चाहिए। अच्छे श्यामपट्ट-कार्य से बच्चों को सुलेख और शुद्ध वर्तनी लिखने में विशेष सहायता मिलती है।

अन्त में कुछ गृह-कार्य भी दिया जाना चाहिए, जिससे छात्र घर जाकर पुनः उस पाठ को पढ़ें। पाठ का सारांश, गद्यांश की व्याख्या, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, शब्द-रचना की सामग्री का पाठ से भिन्न स्थिति एवं क्रिया में प्रस्तुतीकरण आदि से सम्बन्धित गृह-कार्य हो सकता है। आवश्यकतानुसार अगला पाठ, किसी पत्र-पत्रिका का कोई लेख या किसी अन्य पुस्तक की सामग्री भी पढ़ने को दी जा सकती है।

यह शंका उठायी जा सकती है कि यदि उपर्युक्त विधि से ही प्रत्येक पाठ पढ़ाया जाय तो अध्यापन नीरस हो सकता है और यह भी सम्भव है कि वर्ष के अन्त में पुस्तक समाप्त ही न हो। प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त समस्त सोपानों का अनुसरण आवश्यक नहीं है। अध्यापक जहाँ आवश्यक समझें, अन्य विधियाँ भी अपना सकते हैं।

●●